IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य प्रांत में बौद्ध धर्म का विकास: नगरीकरण के विशेष संदर्भ में।

पूजा रैकवार, शोधार्थी

बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र मध्य क्षेत्र में बौद्ध धर्म का विकास और नगरीकरण के विकास पर आधारित है। बौद्ध धर्म, दर्शन और व्यवहारिक जीवन की शिक्षाओं से विकसित हुआ धर्म है। जिसका उत्कर्ष काल भारत में छठी शताब्दी ईसा पूर्व है। बौद्ध धर्म ने भारत से लेकर मध्य एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया चीन, जापान और कोरिया तक के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक नागरिक जीवन में एक केंद्रीय भूमिका निभाई है। बौद्ध धर्म के पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोतों से ज्ञात होता है कि बौद्ध धर्म के उत्कर्ष काल में सांची बौद्ध धर्म के साथ-साथ एक प्रमुख नगर था जो प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर अवस्थित था। बौद्ध धर्म के पुरातात्विक साक्ष्य आज भी सुरक्षित अवस्था में पाए गए हैं तालाब, चित्रांकन, मठ, विहार व स्तूप एक नियोजित और परस्पर सहयोग पर आधारित एक नगरीकरण के विकास की ओर संकेत करते हैं। जहां मानव बिना भेदभाव के रह सकता था साथ ही पशु परिवार भी सुख शांति से निवास कर सकता था। बौद्ध धर्म के दर्शन में निहित समानता और सह अस्तित्व ने विकास के अनेक रास्तों को खोला और एक नियोजित जीवन का प्रमाण प्रस्तुत किया।

की वर्ड: शहरीकरण, शिल्पांकन, श्रम विशिष्टता, आध्यात्मिकता।

नगरीकरण की अवधारणा

मानव सभ्यता का उत्कर्ष है नगरों का विकास। मानव का जीवन क्रम वनों से प्रारंभ होकर ग्राम में बसा व शहरों में विकसित हुआ। मानव अपने औसत जीवन काल में तब तक प्रयोग करता रहा है जब तक कि कार्य सरल ना हो जाए। इस विकास क्रम में लगातार आदिमानव को कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों से सरल सहज जीवन की ओर अग्रसर किया। कृषि के विकास ने मानव जीवन को स्थाई निवासी बनाया। मानव जीवन के क्रम में अरण्य ग्राम और नगर का अपना महत्व रहा है। तैत्तिरीय आरण्यक में पहली बार नगरों की चर्चा मिलती है। नगर गांव से अलग वह क्षेत्र है जहाँ पर एक सुनियोजित मानव समुदाय निवास करता है तथा वाणिज्य एवं उद्योग धंधों में संलग्न रहता है। सुनियोजित उद्योग व्यापार की निरंतरता शहरीकरण की प्रमुख विशेषता है और नगरीकरण की विशेषताएं बौद्ध कलाओं में शिल्पांकन के जरिए एक सुंदर समाज की झांकी का चित्रण प्रस्तुत करती है सांची स्तूप के शिल्पांकन हो या भरहुत के जो आज हमारी शिक्षा ज्ञान का माध्यम हैं की हजारों साल पहले हमारे पूर्वज कैसे एक सुनियोजित समाज में रहते थे जहां श्रम विशिष्टता देखने को मिलती है प्रकृति संरक्षण देखने को मिलता है बहुमंजिला इमारत की योजना देखने को मिलती है, सड़कों की योजना, जल संरक्षण का प्रबंधन, आर्थिक जीवन, सुरक्षा प्रबंध व हमारे प्रचलित संस्कार की जानकारी हमें बौद्ध कलाओं में देखने को मिलती है।

जिसको एक शहर का नाम दिया जाता है। विद्वानों के अनुसार ग्राम से शहर बनने की प्रक्रिया को शहरीकरण कहा जाता है। शहरीकरण का अर्थ मात्र जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि ही नहीं है अपितु वहां के आर्थिक व सामाजिक जीवन में परिवर्तन को शहरीकरण का संकेत माना गया है। शहरीकरण का अर्थ उन क्षेत्रों से शहर बनने की प्रक्रिया चल रही हो न कि जो पहले से ही शहर हो। शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक समाज के समुदाय के आकार और शक्ति में वृद्धि होती रहती है जब तक कि वह संपूर्ण जनसंख्या के अधिकांश भाग को सम्मिलित नहीं कर लेते हैं और संपूर्ण समाज पर प्रकार्यात्मक और सांस्कृतिक अधिपत्य स्थापित नहीं कर लेते। शिकार व पशुपालन के बाद मानव जीवन में कृषि का जन्म हुआ जिससे मानव जमीन के एक स्थान पर रुक गया और उसके रथाई जीवन की नींव पड़ी। स्थाई जीवन ने ग्रामों की जन्म दिया और कृषि अधिशेष और ग्रामीण जीवन की नई समस्याओं के कारण नगरों का जन्म हुआ। नगर मानव सभ्यता के प्रमुख केंद्र बिंदु है जहां की जनसंख्या वाणिज्य उद्योग धंधों में संलग्न रहती है नगरों में व्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था होती है।1 मानव इतिहास के क्रम में नगरों का प्रत्यक्ष उदय सिंधु घाटी सभ्यता के काल से माना जाता है। सबसे पहले गार्डन वी चाइल्ड ने 1936 ई में शहरी केंद्रों को परिभाषित करने का प्रयास किया 12 शहरीकरण के इतिहास के अंतर्गत एक अवधि विशेष में शहरी केंद्र के विस्तार व उन कारणों का अध्ययन किया जाता है, जिनसे शहर का विकास का पतन होता है। शहरीकरण के अंतर्गत नैसर्गिक पर्यावरण अर्थव्यवस्था, राजनैतिक तंत्र, सामाजिक ताने बाने और शहरों में रहने वाले लोगों की सोच विचार का आयाम समाहित है।3 मानवीय वातावरण के अंतर्गत ही शहरी केंद्रों की उत्पत्ति हुई मानवीय इतिहास में शहरों के इतिहास को क्रांति के रूप में देखा गया है और यह कांति कृषि पर आधारित थी। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में गांव व शहर के मध्य संबंध महत्वपूर्ण थे।4 श्रीनिवास के अनुसार नगरीकरण से तात्पर्य केवल सीमित क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि से नहीं है वरन् सामाजिक आर्थिक संबंधों में परिवर्तन से है। "गिडेन जोबर्ग का कथन है कि "विश्व के प्राचीन नगरों का जन्म मुख्य रूप से वैसे ही स्थानों में सबसे पहले जहाँ की जलवायु एवं मिट्टी पौधों एवं जानवरों की जिंदगी की सुरक्षा के लिए अनुकूल थी। इन्हीं पौधों एवं जानवरों के कारण बड़े पैमाने पर लोग एक जगह एकत्रित हो सके। उतना ही नहीं शिल्प कला निर्माण की जानकारी होने के बाद भी लोग वैसे ही स्थानों पर मुख्य रूप से बसने लगे जी पौधों एवं जानवरों के लिए अनुकूल वातावरण वाले ही भले ही वे स्थान छोटा क्यों ना हो इसी अनुकूल वातावरण से आगे चलकर शिल्प कला को विकसित किया गया और भोजन की आपूर्ति होने के कारण शिल्पकारों ने ऐसे ही स्थानों की पसंद किया। जीवन धारण के लिए जिस तरह पौधे एवं जानवरों

अब ऐसे स्थानों को ज्यादा पसंद किया गया जहां जल की पूर्ति भी आसानी से हो सके। क्योंकि जल भी नगरों के निर्माण के लिए जरूरी तत्व था। कृषि उपकरणों के विकास ने कृषि उत्पादन में अधिशेष को जन्म दिया जिससे हर इंसान को उत्पादन करने की आवश्यकता नहीं थी यह लोग अन्य कार्य को करने में स्वतंत्र थे। गार्डन चाइतह ने नगरीकरण की विशेषताओं में विशाल भवन्, घनी आबादी, खाद्य उत्पादन से अलग रहने वाला वर्ग जैसे शासक, शिल्पी, कलाकार, वैज्ञानिक आदि। कृषि अधिघोष के महत्व को गार्डन चाइल्ड ने बहुत महत्व दिया क्योंकि कृषि अधिशेष ने उन व्यक्तियों की अनाज प्रदान किया जो खाद उत्पादन नहीं कर रहे थे साथ ही यह व अन्य उद्योगों का सूजन कर रहे थे जिससे नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र होने लगी। भारत में सर्वप्रथम नगरों का उदय सिंधु हड़प्पा संस्कृति के काल में हुआ। तोथल, मोहनजोदड़ो हड़प्पा, कालीबंगा प्रमुख नगर थे। जिनका अस्तित्व लगभग 1800 ई.पू. तवा बना रहा। इसके बाद पुनः छठी शताब्दी ईसा पूर्व में नगरों का उदय गंगा घाटी में हुआ। इसे द्वितीय नगरीकरण की संज्ञा दी गई। इस समय के महत्वपूर्ण नगरों में कौशांबी अयोध्या, श्रावस्ती, वाराणसी, अवंती, वैशाली, तक्षशिला, चंपा प्रमुख थे।

•शहरीकरण के कारक

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि नगरों का उदय क्यों हुआ? नगरीकरण के इतिहास में विभिन्न कालों में अनेक कारण प्रधान रहे और कुछ विशिष्ट कारण रहे हैं, नगरीकरण की प्रक्रिया का कोई एक प्रमुख कारण न होकर अनेक कारण थे। जिन्होंने नगरों को जन्म दिया। प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद मानव ने उन कला कौशल पर ध्यान दिया जिससे मानव जीवन सरल हो जाए। जिससे नगरी जीवन का उदय हुआ। 5 नगरीकरण के प्रमुख कारक और बौद्ध शिल्पांकन

1. लौह तकनीकी -

लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में कृषि कार्य में लौह धातु से निर्मित लोहे के फाल का प्रयोग होने लगा। लोहे की फाल के उपयोग से कृषि कार्य सरल हुआ। अब कठोर व पथरीली भूमि को भी कृषि योग्य बनाया जाना संभव होने लगा। लोहे की फाल की कठोरता के कारण पत्थर को तोड़ना जुताई करना आसान हो गया। जिससे कृषि से अधिक मात्रा में खाद्य पदार्थ प्राप्त होने लगा। लौह उपकरण से वनों की कटाई आसानी से संभव हुई। जिससे बड़े राजमार्ग व सड़कों का निर्माण संभव हुआ और शहरीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. अधिशेष खाद्य का उत्पादन

नगरीकरण के विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारक खाद्य पदार्थों का अधिशेष उतरादन रहा है। 6 कृषि का अतिरिका उत्पादन में ही नगरों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतिरिक्त उत्पादन ही नगरों को खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराते थे। अतिरिक्त उत्पादन धातु उपकरणों के विकास से ही संभव हुआ था। खेती एक ऐसा व्यवसाय था जो मौसम के अनुरूप ही था साथ ही बारहमासी नहीं था। जिससे निरंतर रोजगार प्राप्त नहीं किया जा सकता था। वस्तुतः नगरों की उत्पत्ति हुई और उद्योग व्यापार को प्रोत्साहन मिलने लगा और अब व्यक्ति जो कृषि के अभाव में बेकार था अब वह कृषि कार्य से मुक्त होकर अन्य कार्य करने लगा। शहरों में कभी भी खाद्य पदार्थ नहीं उत्पादित होते थे। इसके लिए शहर गाँव पर निर्भर थे जो आज भी प्रत्यक्ष है। कृषि कार्य कम व्यक्ति द्वारा गाँव में किया जाता था व शेष व्यक्ति नगरों में उद्योग व्यापार में संलग्र हो गए। 7 जिससे नगरीकरण की गति तीव्र होने लगी।

3. भौगोलिक कारक

किसी भी क्षेत्र इकाई की भौगोलिक संरचना नगरीकरण के विकास में महत्वपूर्ण होती है। प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता व अनुकूलता ने मानवीय जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। वर्षा भूमि की उर्वरा शक्ति सिंचाई साधन, मैदान, प्राकृतिक सुरक्षा ने नगरीकरण को प्रोत्साहित किया। सभ्यता के विकास क्रम में नदियों की उपजाऊ घाटियों ने नगर निर्माण को बढ़ावा दिया। 8 विश्व की महान संस्कृतियों का जन्म जन्म नदी किनारे ही हुआ था। यही कारण है कि विश्व में सर्वप्रथम नगर दजला, फरात, नील सिंधु गंगा, नर्मदा नदी की घाटियों में हुआ। इतिहासकार टायनबी के अनुसार राजधानी नगर होने के लिए कोई भी स्तल भौगोलिक दृष्टि से केंद्र में होना चाहिए जो यातायात व व्यापार के लिए सभी क्षेत्रों से जुड़ा हो साथ ही वह आक्रमणकारियों से सुरक्षा के लिए पहाड़ व दुर्गम स्थान पर अवस्थित हो। होशंगाबाद शहर भी नर्मदा तट पर बसा है। कृषि भूमि का विकास एवं विस्तार पहाड़ी क्षेत्रों की अपेक्षा मैदानों में सरलता से होता है। उसे बंदरगाह की सुविधा प्राप्त होती है जिससे व्यापारिक मार्ग की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। श्रावस्ती, कौशांबी, काशी, मथुरा आदि प्रमुख बंदरगाह थे। इनके जरिए समुद्र तक आसानी से पहुंचा जा सकता था व समुद्र के जरिए दूसरे देशों तक पहुंचना आसान होता था। होशंगाबाद शहर भी ऐसे व्यापारिक मार्गों से जुड़ा था।

4. राजनैतिक कारक-

प्रशासनिक सुविधा एवं सैन्य सुरक्षा के प्रबंधन के कारण ही नगरों का विकास संभव हुआ। नगर राजनीतिक शक्तियों का केंद्र स्थल रहे हैं। राजनीतिक शक्तियों ने एक मजबूत प्रशासन तंत्र का विकास किया। जिसमें नगरों के साथ-साथ लोगों को भी बाहरी शक्तियों से सुरक्षा प्राप्त हुई। सुरक्षा के वातावरण के कारण लोगों में कला संस्कृति और उद्योग धंधों के विकास का अवसर मिल गए राजनीतिक शक्तियों ने केंद्र से लेकर ग्राम तक के जीवन का आर्थिक व राजनीतिक प्रबंधन किया था 10 पूर्व मध्यकाल भारतीय इतिहास में राजनीतिक विघटन का युग था। इसमें केंद्रीय नगरों के अलाव

क्षेत्रीय राज्यों में भी नगरों का विकास शुरू हो गया। 11 चोल, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पाल, प्रतिहार, चौहान आदि शक्तिशाली राजवंशों का उदय ऐसा तत्व था जिसमें शहरीकरण की प्रक्रिया को पुनः जीवित किया। 12 नवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य उत्तर एवं दक्षिण भारत में अनेक प्रादेशिक राज्यों का उदय एक महत्वपूर्ण पहलू है। स्थानीय प्रशासन का केंद्र होने के कारण प्रांतीय राजधानियों में विशाल बाजार विकसित हो गए। ऐसे नगरों में चालुक्यों के वातापी और वेंगी शहर, पल्लवों का काँचीपुरम्, पांड्यों का मदुरै, चोलों का तंजावुर, होयसलों का द्वारसमुद्र, काकतियों का वारंगल, परमारों का धार, चंदेलों का खजुराहो, चौहानों का अजमेर, सोलंकियों का अन्हिलवाड़ा, बंगाल के सेनों का लखनौती एवं प्रतिहारों का कन्याकुब्ज । 13 होशंगाबाद शहर भी क्षेत्रीय शहरों की श्रेणी में ही आता है।

5. शैक्षणिक कारक-

शिक्षा का अर्थ ही सीखना है। शिक्षा मनुष्य को परिष्कृत कर विकास की ओर ले जाने वाला माध्यम है। धर्मशास्त्रों में जीवन के प्रारंभिक 25 वर्ष शिक्षा प्राप्त करने हेतु निर्धारित किए गए थे। शिक्षा के इसी मूल्य के कारण बड़े बड़े विश्वविद्यालयों जैसे तक्षशिला नालंदा विक्रमशिला का विकास हुआ। 14 शिक्षा के इन केंद्रों पर नगरों का विकास हुआ। इन महाविद्यालयों में देश-विदेश के विद्यार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे। तक्षशिला, बनारस, प्रयाग, उज्जैन, वैशाली स्वर्णगिरी, मिथिला आदि प्रमुख शैक्षणिक केंद्र थे। जो शैक्षणिक नगर में परिवर्तित हो गए। शिक्षा के इन केंद्रों पर भारत के बाहर के भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। 15 इनके परस्पर मिलाप से एक दूसरे की कला कौशल व ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ। जिससे विकास का कार्य और तीव्र गति से होने लगा।

6. धार्मिक कारक -

धर्म प्रारंभ से ही मानव जीवन का अंग था। प्राचीन काल में अनेक धार्मिक संस्थान, मंदिरों व तीर्थ स्थानों का उदय हुआ। जो मानव कल्याण के कार्य हेतु प्रतिबध्द रहते थे। इस कारण से इन स्थलों व मंदिरों का विशिष्ट महत्व था व यह समस्त जनों में सम्मानीय व पूज्यनीय हो गए और एक निश्चित समय पर यहां उत्सवों का आयोजन होने लगा। इन्हीं कारणों ने देश के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों पर नगरों को जन्म दिया। 16 मंदिरों ने शहरी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। कुछ प्राचीन नगर अपने में धार्मिक महत्व के कारण बार-बार नष्ट होने पर भी बनें रहे। 17 मथुरा, काशी, उज्जैन, ओंकारेश्वर प्रमुख धार्मिक स्थल रहे हैं। दक्षिण भारत में श्रीरंगम, चिदंबरम् व मद्रे तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित हुए नगर हैं। 18 जैन व बौध्द के कारण भी कुशीनारा, कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ती, वैशाली, गया. कुंडलवन आदि धार्मिक नगरों का विकास हुआ। ताकि जीवन की सामान्य सुविधाएं प्राप्त हो सके एवं कलात्मक वस्तुओं का विनिमय हो सके। मंदिरों ने शहरी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

7. वाणिज्य एवं व्यापारिक कारक -

नगरों के विकास में व्यापार एवं वाणिज्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। व्यापार एवं वाणिज्य की वृद्धि के कारण कुछ नगरों का विकास हुआ बाद में व्यापार के ह्रास के कारण नगरों का भी पतन हो गया। 19 पेहोवा (हरियाणा) व अहाड़ ऐसे ही नगर थे। विभिन्न प्रकार के शिल्प एवं उद्योगों ने भी।

की आवश्यकता महसूस की गई उसी तरह बौद्ध कलाओं के शिल्पांकन में निहित मूर्तियां से मानवीय जीवन के संपूर्ण पक्ष की जानकारी प्राप्त होती है। मात्र ये पाषाण की कलाकृति नहीं है हमारे अतीत का सजीव चित्रण है। जिस पर पुनः अध्ययन की आवश्यकता है। ताकि हम पुनः अपना इतिहास जान सकें उससे सीख सकें और आत्मसात करते हुए अपने जीवन की स्वर्णिम यात्रा की ओर बढ़ें।

•संदर्भ सूची

1. सिंह संतोष कुमार, उत्तर भारत में नगरों का विकास पृ.1

2. श्रीवास्तव ए. के, अरबनाइजेशन कन्सट एण्ड ग्रोथ पृ.1

3. मिश्रा एस.सी. द सिटी इन इंडियन हिस्ट्री पृ.।

4. मिश्रा प्रियंका, मध्यकाल में बुरहानपुर का शहरीकरण पृ.2

5. तोमर एवं गोयल, नगरी समाज शास्त्र पृ.533

6. श्रीवास्तव ए.के., अरबनाइजेशन कंसेप्ट एण्ड ग्रोथ, पृ.26

7. श्रीवास्तव ए.के., अरबनाइजेशन कंसेप्ट एण्ड ग्रोथ पृ.27

8. मिश्रा प्रियंका, मध्यकाल में बुरहानपुर का शहरीकरण, पृ. 14

9. सिंह संतोष कुमार, उत्तरी भारत में नगरों का विकास, 132

10. श्रीवास्तव ए.के., अरबनाइजेशन कंसेप्ट एण्ड ग्रोथ, पृ.33

11. सिंह संतोष कुमार, उत्तरी भारत में नगरों का विकास, पृ.132

12. सिंह संतोष कुमाप, उत्तरी भारत में नगरों का इतिहास, पृ.132

13. सिंह संतोष कुमार, उत्तरी भारत में नगरों का इतिहास, पृ. 133

14. श्रीवास्तव ए.के., अरबनाइजेशन कंसेप्ट एण्ड ग्रोथ, पृ.35

15. अल्तेकर ए.एस., एजुकेशन इन एंशियंट इंडिया, पृ. 110

16. ठाकुर विजय कुमार, अरबनाइजेशन इन एंशियंट इंडिया, पृ.54

17. ठाकुर विजय कुमार, अरबनाइजेशन इन एंशियंट इंडिया, पृ.55

18. सिंह संतोष कुमार, उत्तरी भारत में नगरों का इतिहास, पृ.136

19. चट्टोपाध्याय बी.डी., ट्रेड एण्ड अर्बन सेन्टर्स इन अर्ली मिडिवल नार्थ इंडिया, पृ.203

20. नकबी एच.के., अर्बन सेन्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इंडिया, पृ.270